

# आज का कानपुर

कानपुर में प्रकाशित समाचार, राज्य, संस्कृत, साहित्य और इमेज़, बैंगन, बाजार, खेड़ी, व्यापार, इनाम, खाद्यों, व्यापार, अन्य खबरें, भूमि, आजकल में घटनाएँ

## मक्का, बाजरा एवं ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण

### आज का कानपुर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के त्रैम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का, ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70 प्रतिशत, प्रोटीन 10 प्रतिशत के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे में भी हानि पहुँचाता है।

ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुंडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती हैं। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु क्रिनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीर्वर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है।



# सत्य का आर

समाचार पत्र



20,09,2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

Top News

## पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

### मक्का, बाजरा एवं ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण



लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुंडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमज़ोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु क्विनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्चर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अथवा इमामे ट्रिन बैंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारों तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है। हरे भुट्टे हेतु बोई फसल में भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें।



**दैनिक****नगर छाया****आप की आवाज़.....**[www.nagarछाया.com](http://www.nagarछाया.com)

उत्तर प्रदेश की जीवनी की

**मक्का, बाजरा व ज्वार में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी****कानपुर (नगर छाया समाचार)**

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का, ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में काबोहाइड्रेट 70%, प्रोटीन 10% के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे में भी हानि पहुंचाता है 7 ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती हैं। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमज़ोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच



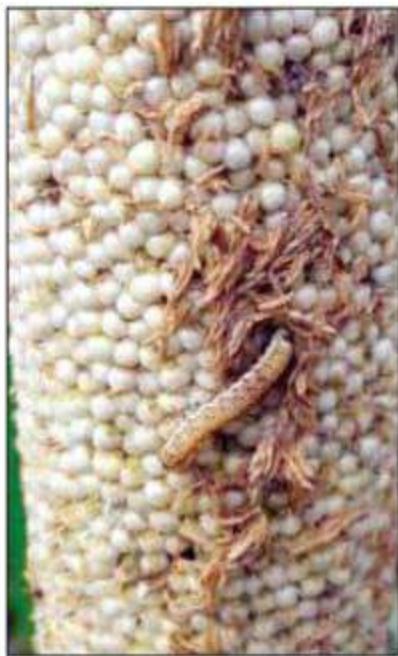
से टूट जाता है।

इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु किनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रसायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें।



खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रसायनिक कीटनाशक जैसे टानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्रर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारों तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है। हरे भुट्टे हेतु बोई फसल में भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दबा का छिड़काव बंद कर दें।

# मवका, बाजरा और ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण



कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निदेश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का, ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में



21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में काबोहाइड्रेट 70 प्रतिशत, प्रोटीन 10 प्रतिशत के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाया जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे में भी हानि पहुँचाता है। ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुडियाँ 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती हैं। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के



प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमज़ोर हो जाते हैं और भूटे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है। इस कीट के



नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु किनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुटे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुँचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पढ़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें।

# दिव्यामुद्रे

editor@divyamudra.com

बुधवार, 20 सितंबर 2023

वर्ष: 06 अंक: 29

पृष्ठ: 08, मूल्य: 2 रुपये

उत्तराखण्ड, गोद्या-प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, बिहार, गुजरात, गुजरात, संघ प्रदेश, से एक साथ प्रसारित

## मक्का, बाजरा एवं ज्वार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण हेतु जारी की एडवाइजरी

दि ग्राम टुडे, कानपुर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का, ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर



छेद करके अन्दर ही अन्दर

खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमज़ोर हो जाते हैं और भुट्टे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है।

इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु किवनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले

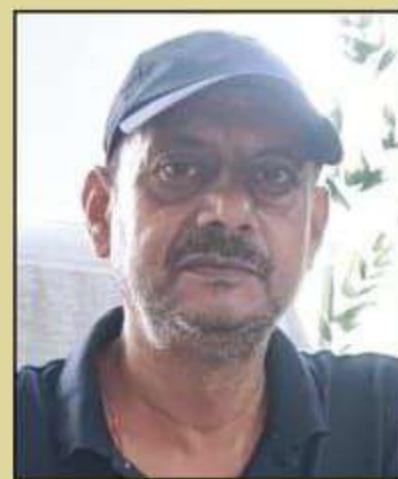
या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत

0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्प्रिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्ट्र 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारों तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है हरे भुट्टे हेतु बोई फसल में भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें।

# मक्के में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन के अलावा अन्य पोषक पदार्थ

### अटीखण

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के त्रैम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने मक्का, ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है।

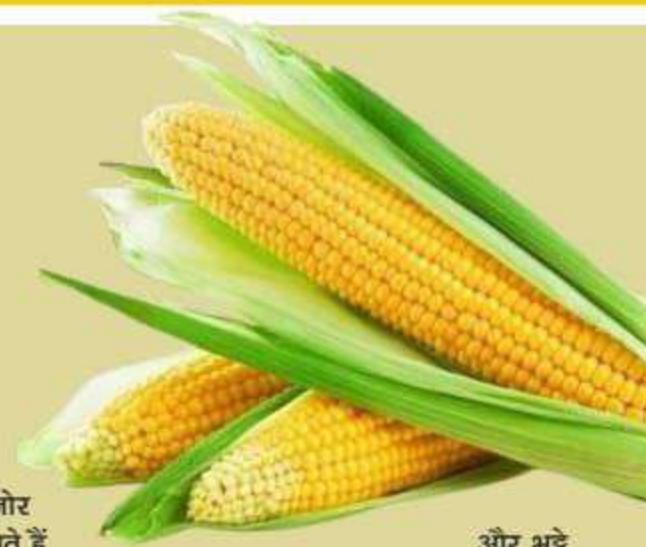


मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे में भी हानि पहुँचाता है 7 ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुडियां 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती हैं। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे

कमजोर हो जाते हैं और छेद आते हैं

और भुट्ठे एवं हवा चलने पर पौधा बीच से ढूट जाता है।

इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाई मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण हेतु किनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़ाव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीर्वर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अड़े देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्ठे को भी खाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुँचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करें। खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या रिपेनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेयोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथिन मि. र 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़ाव करें। अयवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़ाव कर दें। मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारों तरफ गेब्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है। हरे भुट्ठे हेतु बोई फसल में भुट्टा तोड़ने के 15 दिन पहले दवा का छिड़काव बंद कर दें।



# राष्ट्रीय स्पर्श

## मवफा, बाजरा एवं ज्यार में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रभावी नियंत्रण जरूरी

कानपुर। सीएमए के कूलपति शैक्षण्य अनन्द कुमार सिंह के निर्देश के तहम में कूरी किहन केंद्र दलीयनगर कानपुर के कूरी वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने नक्काज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु एछवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि छरोफ नक्का 14049 हेल्टेनर, ज्वार 14676 हेल्टेनर एवं बाजरा की गुरुत्वी जनपद में 21956 हेल्टेनर क्षेत्रकाल में की जाती है। उन्होंने बताया कि याको में काजीहाइड्रेट 70%, प्रोटीन 10% के आलादा भाव प्रोटीन चाहते भी रासा जाता है। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष के रासा रासा वाले इलाज के लिए भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि इन कीटों की मात्रा के लिए इसका उपयोग कीटों की जाती है।

याको के आलादा यह ज्वार एवं बाजरे में भी हानि पहुँचाता है 7 भ्यान देने वाली याका चढ़ देते हैं कि इसकी सुंकियां 20 से 25 मिमी लम्बी और लहेदी लाकेद रंग की होती हैं। जिसका निर काला होता है और यह लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कोट की सुंकियां तानों में छेद करके अन्दर



ही अन्दर खाती रहती है। फसल के प्रारंभिक अवधार में प्रकोप के कालायकाय मूल गोष्ठ बनता है, जबकि चाद की अवधार में प्रकोप अधिक होते चाद वैधुतिक भौतिक जारी है और भूटी छोटे भौती हैं एवं इसका चालने पर चौड़ा बीच से टूट जाता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु किसान भाव नक्का की फसल में संतुलित मात्रा में लारियों का प्रयोग करें। इसके समानिक नियंत्रण हेतु किनालफल 25 ड्राइहात, हंसी, 1.5 सी. को 500 से 600 सौहात पानी में चोलकर छिड़काय करें। उन्होंने बताया कि फल आनी तक ऐसा कोट है, जो कि एक मादा पहंचा उकेलो या समूहों में अपने जीवन काल में एक इलाज से अधिक बोहंड देती है।

इसके लाजीं पनियों को किनारे से चालियों की निचली मत्तह और नक्कों के भूटे जो भी छाते हैं। इसकी लार्वा अवस्था हो नक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुँचाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि संतुलित मात्रा में यासायनिक लारियों का सही प्रयोग करें। खेत में बड़े युरने छारपतवार और अवशेषों को नह लें। इस कीट के नियंत्रण के लिए यासायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिसिलोएन 5 ड्राइहात 0.4 मिली की दर से प्रति सौहात पानी का लिवेटोर 11.7 ड्राइहात हस्ती, 0.5 मिली की दर से प्रति सौहात पानी का बांधीय गोष्ठाय 12.6 ड्राइहात लैम्फा या इडेलोप्रिन मिल्हर 9.5 ड्राइहात जैह, 0.25 मिली प्रति सौहात पानी में चोलकर छिड़काय करें। अभ्यास हमारे लिए जानेवाले हैं। प्राप्ति । सौहात पानी में चोलकर छिड़काय कर दें। नक्का, ज्वार हाथा बाजरे की फसल के बारी तारफ गोन्दा या लोखिया को दुआई करने से भी कोट का नियंत्रण किया जा सकता है हारे भूटे छेद फसल में भूटे गोदने के 15 दिन पहले द्रव्य का लियूस्टर बंद कर दें।

# मक्का, ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए जारी की एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार सिंह ने मंगलवार को मक्का, ज्वार, एवं बाजरा फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि खरीफ मक्का 14049 हेक्टेयर, ज्वार 14676 हेक्टेयर एवं बाजरा की खेती जनपद में 21956 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। उन्होंने बताया कि मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70 फीसदी, प्रोटीन 10 फीसदी के अलावा अन्य पोषक पदार्थ भी पाये जाते हैं। जिसके कारण इसका उपयोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि तना छेदक कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट



है। मक्का के अलावा यह ज्वार एवं बाजरे में भी हानि पहुँचाता है। इसकी सुडियाँ 20 से 25 मिमी लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती हैं। जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है। इस कीट की सुडियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं। फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप अधिक होने पर पौधे कमज़ोर हो जाते हैं और भुट्ठे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है।

उन्होंने कहा कि किसान इस कीट के नियंत्रण के लिए मक्का की फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। इसके रसायनिक नियंत्रण के लिए क्रिनालफास 25 प्रतिशत, ई.सी. 1.5 ली. को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि फॉल आर्मीवर्म ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है। इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्ठे को भी खाते हैं।

इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुँचाती है। उन्होंने किसानों को संतुलित मात्रा में रसायनिक उर्वरकों का सही प्रयोग करने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि किसान खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट कर इस कीट के नियंत्रण के लिए रसायनिक कीटनाशक जैसे ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या सिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत + लेम्डा साइहेलोथ्रिन मिक्कर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अथवा इमामे ट्रिन बेंजोएट 1 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। मक्का, ज्वार तथा बाजरे की फसल के चारों तरफ गेन्दा या लोबिया की बुआई करने से भी कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।